चतुर्थः पाठः

हास्यबालकविसम्मेलनम्

(अव्ययप्रयोगः)

अनेक प्रकार की वेशभूषा को धारण किए हुए चार बाल कवि मंच पर बैठे हुए हैं | नीचे श्रोता जन हास्य कविताएं सुनने के लिए उत्सुक हैं और शोर कर रहे हैं |

तभी संचालक बोलते हैं आप लोग शोर मत कीजिए आज बहुत ही खुशी का अवसर है कि इस कवि सम्मेलन में काव्य का नाश करने वाले तथा समय को बर्बाद करने वाले भारतवर्ष के श्रेष्ठ हास्य कवि आए हैं | (यहां पर संचालक व्यंग किए हैं) | आइए हम तालियों के द्वारा इनका स्वागत करें |

तभी एक बाल कवि जिसका नाम गजाधर है उठ कर आता है और बोलना शुरू करता है सभी नीरस जनों को नमस्कार | (यहां पर आप देख सकते हैं फिर से व्यंग बोला जा रहा है ताकि लोग हंसे) ....पहले मैं आधुनिक वैद्य के विषय में अपनी कविता सुनाता हूं – है वैद्यराज ! हे यमराज के सगे भाई तुझे मेरा नमस्कार है |यमराज तो केवल प्राणों का हरण करता है परंतु वैद्य प्राण और धन दोनों का हरण करता है | इस बात पर सभी जोर से हंसते हैं....

फिर दूसरा कवि जिसका नाम कालांतक है वह उठ कर आता है और बोलता है – अरे वैद्य तो सभी स्थान पर हैं परंतु मेरे जैसे जनसंख्या को कम करने में कुशल नहीं हैं | (इस कवि ने यहां पर व्यंग किया है) | आप मेरी भी कविता सुनिए – एक वैद्य जलती हुई चिता को देखकर आश्चर्य हो गया , वह सोचने लगा नाही मैं वहां पर गया और ना मेरा कोई भाई (यानी यमराज) तो फिर यह किसके हाथों की कला है |

इस बात पर फिर से सभी जोर से हंसते हैं....

फिर तीसरा कवि मोटू का रूप धारण किए हुए आता है (जिसे तुन्दिल कहा गया है)।और पेट पर हाथ फेरते हुए बोलता है- मैं पेटू हूं । सुनिए सुनिए मेरी भी यह कविता सुनिए – और जीवन में अपनाइए । दूसरों के अन्न को प्राप्त करने में मत शर्माइए क्योंकि वह बहुत ही कठिनाई से प्राप्त होता है । और शरीर तो बार-बार मिलते रहते हैं । (यहां पर कवि कहना चाहते हैं कि पराए माल पर जहां तक हो सके हाथ फेर देना चाहिए | इस संसार में पराया माल या अन्न मुश्किल से प्राप्त होता है | मगर शरीर तो बार-बार मिलते रहते हैं | मतलब जन्म मरण के बाद बार-बार शरीर मिलती रहते हैं |

फिर चौथे कवि जिनका नाम चार्वाक है ,उठ कर आते हैं और बोलते हैं – हां हां शरीर का पोषण सभी प्रकार से करना सही है यदि धन नहीं है , तो भी कर्ज लेकर भी पौष्टिक पदार्थों का भोग करना ही चाहिए | फिर बोलते हैं – जब तक जिए , सुख से जिए ,चाहे कर्ज लेकर भी भी घी पिएं |

इसी बात पर श्रोतागण बोलते हैं तो कर्ज को कैसे चुकाया जाए |

चावार्क कवि फिर बोलते हैं – मेरी शेष बची हुई कविता को भी सुनिए – घी पीकर परिश्रम करके लोगों का कर्ज उतार दीजिए |

इस प्रकार काव्य पाठ संपन्न होता है ,लेकिन तभी काव्यपाठ सुनने से प्रेरित होकर एक बालक भी आंसू कविता (तुरंत रची गई कविता) को रचता है और हंसी के साथ सुनाता है | बालक बोलता है – सुनिए सुनिए आप मेरी भी कविता सुनिए | मैं गजाधर कवि, पेटू और खाने के लोभी ,यमराज को, वैद्य को और चार्वाक कवि को प्रणाम करता हूं |

काव्य को सुनाकर “हा हा हा” करके बालक हंसता है और दूसरे भी हंसते हैं |

और बाहर निकलकर सभी अपने-अपने घर जाते हैं |

Question 2:

मञ्जूषात: अव्ययपदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

अलम् अन्त: बहि: अध: उपरि

(क) वृक्षस्य ..... खगा: वसन्ति।

(ख) ..... विवादेन।

(ग) वर्षाकाले गृहात् ..... मा गच्छ।

(घ) मञ्चस्य ..... श्रोतार: उपविष्टा: सन्ति।

(ङ) छात्रा: विद्यालयस्य ..... प्रविशन्ति।

Answer:

(क) वृक्षस्य <u>उपरि</u> खगा: वसन्ति।

(ख) <u>अलम्</u> विवादेन।

(ग) वर्षाकाले गृहात् <u>बहि:</u> मा गच्छ।

(घ) मञ्चस्य <u>अध:</u> श्रोतार: उपविष्टा: सन्ति।

(ङ) छात्रा: विद्यालयस्य <u>अन्त:</u> प्रविशन्ति।

Question 3:

अशुद्ध पदं चिनुत-

(क) गमन्ति, यच्छन्ति, पृच्छन्ति, धावन्ति। ----------

(ख) रामेण, गृहेण, सर्पेण, गजेण। ----------

(ग) लतया, सुप्रिया, रमया, निशया। ----------

(घ) लते, रमे, माते, प्रिये। ----------

(ङ) लिखति, गर्जति, फलति, सेवति। ----------

Answer:

(क) गमन्ति, यच्छन्ति, पृच्छन्ति, धावन्ति। गमन्ति

(ख) रामेण, गृहेण, सर्पेण, गजेण। गजेण

(ग) लतया, सुप्रिया, रमया, निशया। सुप्रिया

(घ) लते, रमे, माते, प्रिये। माते

(ङ) लिखति, गर्जति, फलति, सेवति। सेवति

Question 4:

मञ्जूषात: समानार्थकपदानि चित्वा लिखत-

प्रसन्नताया: चिकित्सकम् लब्ध्वा कुटिल: दक्षा:

प्राप्य ----------

कुशला: ----------

हर्षस्य ----------

वक्र: ----------

वैद्यम् ----------

Answer:

प्राप्य लब्ध्वा

कुशला: दक्षा:

हर्षस्य प्रसन्नताया:

वक्र: कुटिल:

वैद्यम् चिकित्सकम्

5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–

(क) मञ्चे कति बालकवयः उपविष्टाः सन्ति?

(ख) के कोलाहलं कुर्वन्ति?

(ग) गजाधरः कम् उद्दिश्य काव्यं प्रस्तौति?

(घ) तुन्दिलः कस्य उपरि हस्तम् आवर्त्तयति?

(ङ) लोके पुनः पुनः कानि भवन्ति?

(च) किं कृत्वा घृतं पिबेत्?

उत्तराणि– (क) चत्वारः (ख) श्रोतारः

(ग) आधुनिकवैद्यम् (घ) तुन्दस्य

(ङ) शरीराणि (च) ऋणं

Question 6:

मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथायाः पूर्तिं कुरुत-

नासिकायामेव वारंवारम् खड्गेन दूरम् मित्रता मक्षिका

व्यजनेन उपाविशत् छिन्ना सुखः प्रियः

पुरा एकस्य नृपस्य एकः ---------- वानरः आसीत्। एकदा नृपः ---------- आसीत्। वानरः ---------- तम् अवीजयत्। तदैव एका ---------- नृपस्य नासिकायाम् ---------- ।

यद्यपि वानरः ---------- व्यजनेन तां निवारयति स्म तथापि सा पुनः पुनः नृपस्य ---------- उपविशति स्म। अन्ते सः मक्षिकां हन्तुं ---------- प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय ---------- गता, किन्तु खड्गप्रहारेण नृपस्य नासिका ---------- अभवत्। अतएवोच्यते- "मूर्खजनैः सह ---------- नोचिता।"

Answer:

पुरा एकस्य नृपस्य एकः प्रियः वानरः आसीत्। एकदा नृपः सुखः आसीत्। वानरः व्यजनेन तम् अवीजयत्। तदैव एका मक्षिका नृपस्य नासिकायाम् उपाविशत् ।

यद्यपि वानरः वारंवारम् व्यजनेन तां निवारयति स्म तथापि सा पुनः पुनः नृपस्य नासिकायामेव उपविशति स्म। अन्ते सः मक्षिकां हन्तुं खड्गेन प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय दूरम् गता, किन्तु खड्गप्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत्। अतएवोच्यते-"मूर्खजनैः सह मित्रता नोचिता।"

Question 7:

विलोमपदानि योजयत-

अधः नीचैः

अन्तः सुलभम्

दुर्बुद्धे! उपरि

उच्चैः बहिः

दुर्लभम् सुबुद्धे!

Answer:

अधः उपरि

अन्तः बहिः

दुर्बुद्धे! सुबुद्धे!

उच्चैः नीचैः

दुर्लभम् सुलभम्